# किसान मेला-2024

# खाद्य-सुरक्षा से पोषण सुरक्षा की ओर

## डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

## 24-26 फरवरी, 2024

**आयोजक:**

**प्रसार शिक्षा निदेशालय**

**डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा,**

**समस्तीपुर-848 125 (बिहार)**

## डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर

कृषि और पोषण एक सामान्य बिंदु साझा करते हैं : ''भोजन''। भोजन कृषि गतिविधियों का एक प्रमुख परिणाम है और बदले में, अच्छे पोषण में एक महत्वपूर्ण निवेश है। हरित क्रांति की बदौलत, भारत 1960 के दशक की शुरुआत में खाद्य आयात पर निर्भर देश से, कई कृषि उत्पादों के प्रमुख निर्यातक में बदल गया है। हरित क्रांति में बढ़ती आबादी के भोजन हेतु उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रौद्योगिकियाँ, पर्यावरण पर अपना प्रभाव छोड़ती हैं। इससे भारत ने खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल कर ली है लेकिन यह अनाज केंद्रित, क्षेत्रीय पक्षपातपूर्ण और गहन संसाधन उत्पादन प्रणाली है। जबकि इन नीतियों ने देश भर में कैलोरी की पर्याप्तता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इससे भूख जैसी घटनाओं में संतोषजनक कमी आई। इन फलताओं के बावजूद भी अधिक से अधिक लोग भूखे रह रहे हैं, उनमें पर्याप्त पोषक तत्वों की कमी है तथा विडंबना यह है कि, अधिक वजन वाले और मोटापे से ग्रस्त लोग अधिक हैं। कुपोषण के इस तिगुने बोझ को भी सामान्य स्थिति के रूप में देखा गया है।

भारत में खाद्य सुरक्षा की स्थिति चार आयामों पर निर्भर करती है यथा उपलब्धता, अभिगम्यता, उपयोग और स्थिरता। भोजन का उपयोग, जो खाद्य सुरक्षा का एक प्रमुख पहलू है, का मूल्यांकन एन.एफ.एच.एस.-5 के आकड़ों के आधार पर पोषण संकेतकों जैसे स्टंटिंग, वेस्टिंग, कम वजन, एनीमिया और मोटापे के माध्यम से किया गया है।

मृदा परीक्षण और मृदा पुन:पूर्ति के बिना उच्च विश्लेषण वाले रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से मिट्टी में Zn, Cu, Fe, Mn, Bo आदि जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो रही है। दूसरी ओर, वनों की कटाई और बाढ़ ने मिट्टी को लवणीय तथा क्षारीय कर दिया है। इसलिए, इन मिट्टी में पैदा होने वाली फसलों में अपर्याप्त खनिज लवण होते हैं जिसके परिणामस्वरूप सूक्ष्म पोषक तत्वों की आपूर्ति कम हो गई है।

विस्तृत राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण (2016-18) ने सूक्ष्म पोषक तत्वों से कुपोषण की भूमिका पर प्रकाश डाला है। यह बेहतर उत्पादन, पोषण, पर्यावरण और जीवन के लिए भारतीय कृषि में परिवर्तनकारी बदलाव की आवश्यकता की ओर संकेत करता है। पौष्टिक भोजन की सामर्थ्य और पहुँच में सुधार के लिए फसल विविधीकरण, कम लागत वाली जलवायु अनुकूल और श्री अन्न जैसी फसलों की खेती, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के खद्यानों में विविधाता, बायो फोर्टिफिकेशन जैसे कई कदम उठाये जा रहे हैं। हाल के दिनों में महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया गया है जिसका बच्चों की पोषण स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। आगे चलकर इन्हें और मजबूत करने की जरूरत है।

पोषण सुरक्षा के लिए विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों के सेवन की आवश्यकता होती है, जो आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते हैं। इस प्रकार भोजन अपने आप में पोषण सुरक्षा में योगदान देने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। हमें खाद्य सुरक्षा के बजाए पोषण सुरक्षा में अंतिम लक्ष्य के बारे में सोचना चाहिए।

भारतीयों को बेहतर खाने के लिए एक बहु-आयामी रणनीति की आवश्यकता है। आहार पैटर्न और पोषण में संरचनात्मक बदलाव के लिए उत्पादन में भी बदलाव की आवश्यकता होती है। पोषण सुरक्षा के मार्गों में आहार विविधता में सुधार, पोषण वाटिका, फसल कटाई के बाद का नुकसान को कम करना, पोषण सुरक्षा कार्यक्रमों को अधिक पोषण-संवेदनशील बनाना, महिला सशक्तिकरण, मानकों और विनियमों को लागू करना, जल स्वच्छता में सुधार, पोषण शिक्षा और डिजिटल तकनीकी के प्रभावी उपयोग शामिल हैं। कुपोषण जैसे जटिल समस्या का समाधान करना एक बहुत बड़ा कार्य है जिसके लिए हमें कृषि-खाद्य प्रणालियों को समग्र रूप से देखने और बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

कुपोषण के तिहरे बोझ जैसे छिपी भूख, संतुलित पोषक तत्वों की कमी और अधिक वजन या मोटापे को संबोधित करने और पोषण सुरक्षा की दिशा में आगे बढ़ने के लिए विश्वविद्यालय ने किसानों तथा अन्य हितकारकों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए इस विषय पर किसान मेला आयोजित करने की योजना बनाई है।

### किसान मेले का उद्देश्य :

कृषि शिक्षा, अनुसंधान एवम् ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि तकनीकों के प्रसार की उपादेयता को ध्यान में रखते हुए देश में कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना की गयी। इसके तहत् प्रसार के सशक्त माध्यम के रूप में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष एक वृहत किसान मेले का आयोजन किया जाता है जिसका मुख्य उद्येश्य वैज्ञानिकों, प्रसार कार्यकर्त्ताओं, निर्माताओं, सेवा प्रदाताओं एवं किसानों का समागम है। वर्ष 2024 में यह मेला 24-26 फरवरी तक विश्वविद्यालय प्रांगण में आयोजित किया जा रहा है। खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ पोषण सुरक्षा हमारे मानव-संसाधन के संरक्षण एवम् विकास का अहम् आधार है, इसी को ध्यान में रखते हुए इस मेले के मुख्य विषय वस्तु के रूप में इस वर्ष **'खाद्य सुरक्षा से पोषण सुरक्षा की ओर'** का चयन किया गया।

### मेले के मुख्य आकर्षण :

- कृषि संबंधी ज्ञान का प्रसार।
- कृषि संबंधी कौशल का प्रसार।
- उद्यानिक, पशु-पक्षी प्रदर्शनी।
- निर्माताओं/सेवा प्रदाताओं/वित्त पोषक संस्थाओं की प्रदर्शनी।
- उद्यान एवम् वन्य नर्सरी पौध की बिक्री हेतु उपलब्धता।
- फल-फूल, कन्द-मूल, सब्जी, दलहन, तेलहन, अन्न एवम् कद्दन इत्यादि से संबंधित प्रदर्शनी।
- मूल्य वर्धित खाद्य-पदार्थों एवम् उत्पादों से संबंधित प्रदर्शन/ज्ञानवर्धन।
- किसान गोष्ठियों/प्रश्नोत्तरी/सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन।
- किसानों का समसामयिक समस्याओं पर चर्चा एवम् निदान संबंधी मार्गदर्शन।
- किसानों एवं सेवा प्रदाताओं के उत्तम प्रदर्शों पर पुरस्कारों की व्यवस्था।
- राज्य एवं राज्य के बाहर की सरकारी संस्थाओं, विभिन्न यंत्र निर्माताओं एवम् सेवा प्रदाताओं द्वारा प्रादर्शों का आयोजन।
- ड्रोन के कृषि संबंधी उपयोग, सुक्ष्म सिंचाई पद्धति, प्राकृतिक खेती की जानकारी एवम् ड्रोन का प्रत्यक्षण।
- बीज, यंत्र, विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं एवम् कृषि के अन्य उपादानों की बिक्री हेतु उपलब्धता।
- खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के लिए छोटे किसानों के द्वारा मशरूम उत्पादन एवं संरक्षण का प्रदर्शन।

उपरोक्त आकर्षणों को धयान में रखते हुए मेले में 10-15 हजार किसानों के भाग लेने की संभावना है।

### डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

कृषि शिक्षा की जन्म स्थली में अवस्थित स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के नाम पर स्थापित इस विश्वविद्यालय ने स्थापना काल से ही कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (बिहार) अपने विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों, अनुसंधान एवं शिक्षा संस्थानों के विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा कृषि के विकास एव प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के निर्वहन के लिए सदैव तत्पर है।

### आमन्त्रण

कृषि एवं कृषि के विभिन्न आयामों से सम्बद्ध व्यक्तियों, संस्थाओं, कृषक संगठनों, उत्पादकों एवं विपणन संघों को इस किसान मेले में स्टॉल प्रदर्शन, निरूपण एवं सहभागिता हेतु विश्वविद्यालय परिवार आप सभी को सादर आमन्त्रित करता है।

### प्रदर्शकों के लिए उपलब्ध सुविधाएँ

- प्रत्येक प्रदर्शनी स्टॉल पर 2 मेजें, 2 कुर्सियाँ और आवश्यक बिजली की आपूर्ति उपलब्ध होगी।
- ऊपर वर्णित सुविधाओं एवं दरों में परिवर्तन, छूट एवं रियायत का सर्वाधिकार विश्वविद्यालय मेला प्रशासन के पास सुरक्षित रहेगा।

### स्टॉल

इस मेले में प्रदर्शनी हेतु विश्वविद्यालय द्वारा निम्न प्रकार के स्टॉल उपलब्ध कराये जायेंगें:

- तीन तरफ से घिरे आच्छादित स्टॉल।
- 4 मीटर x 4 मीटर 16 वर्गमीटर, दर रू. 8,000.00 (आठ हजार रूपये) मात्र।

### कार्यक्रम

**24 फरवरी, 2024 (शनिवार) पंजीकरण, उद्घाटन एवं प्रदर्शनी**

**25 फरवरी, 2024 (रविवार) प्रदर्शनी/गोष्ठी/सेमिनार/प्रक्षेत्र-प्रभमण**

**26 फरवरी, 2024 (सोमवार) प्रदर्शनी, गोष्ठी, मूल्यांकन, समापन समारोह**

### डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा कैसे पहुँचें।

समस्तीपुर रेलवे स्टेशन से सड़क मार्ग से 20 कि0मी0 पर

मुजफ्फरपुर रेलवे स्टेशन से सड़क मार्ग से 40 कि0मी0 पर

दरभंगा हवाई अड्डा से सड़क मार्ग से 50 कि0मी0 पर

सड़क मार्ग से 9 कि0मी0 पर खुदीराम बोस पूसा रेलवे स्टेशन से

पटना हवाई अड्डे से सड़क मार्ग से 100 कि0मी0 पर

### मेला स्मारिका के लिए विज्ञापन का आकार एवं दरें।

| क्रमं सं0 | आकार | दर (रु.) |
|---|---|---|
| 1 | बैकसाइड फुल रंगीन पृष्ठ | 1,00,000.00 |
| 2 | इनसाइड कवर रंगीन पृष्ठ | 75,000.00 |
| 3 | आधा रंगीन पृष्ठ | 50,000.00 |
| 4 | चौथाई फुल रंगीन पृष्ठ | 25,000.00 |

विज्ञापन के लिएअंग्रजी और हिन्दी दोनों में और साथ-ही-साथ प्रिंट करने के लिए तैयार प्रारूप में सॉफ्ट कॉपी भेजी जा सकती है। इसका भुगतान "Kisan Mela-RPCAU, Pusa" के नाम पंजाब नेशनल बैंक, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा A/C No. 4512000100027244 (IFSC Code: PUNB0451200) को नगद/डिमान्ड ड्रॉफ्ट/यू.पी.आई. से किया जा सकता है। राशि भुगतान करने के पश्चात ई-मेल : dde1.rpcau@gmail.com पर सूचित करें।

### सम्पर्क सूत्र

**डॉ. एम. एस. कुण्डु**
निदेशक प्रसार शिक्षा
रा.प्र.के.कृ.वि.वि., पूसा (समस्तीपुर) 848 125
मो0- 6287797109, 9474290668
ई-मेल : dee@rpcau.ac.in

**डॉ. जितेन्द्र प्रसाद**
उपनिदेशक प्रसार-I
आयोजन सचिव, किसान मेला-2024,
रा.प्र.के.कृ.वि.वि., पूसा
मो0- 9835763503, 6287797198
ई-मेल : dde1.rpcau@gmail.com

**डॉ. अनुपमा कुमारी**
उपनिदेशक प्रसार-II
सह-आयोजन सचिव, किसान मेला-2024,
रा.प्र.के.कृ.वि.वि., पूसा
मो.-8434383989, 6287797237
ई-मेल : anupmakumari@rpcau.ac.in

**डॉ. आर. के. तिवारी**
वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान
(कृ.वि.के., बिरौली)
सह-आयोजन सचिव,
किसान मेला-2024,
रा.प्र.के.कृ.वि.वि.,पूसा
मो.-6287797157ए 7295046855
ई-मेल : ravindra@rpcau.ac.in

**डॉ. एम. एल. मिणा**
वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान
(कृ.वि.के., तुर्की)
सह-आयोजन सचिव,
किसान मेला-2024,
रा.प्र.के.कृ.वि.वि.,पूसा
मो.-9414856397
ई-मेल:_head.kvk.turki@rpcau.ac.in

Kisan Mela-2024

# Moving Towards Nutritional Security from Food Security

**Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa**

## 24 -26 February, 2024

Organized by

**Directorate of Extension Education**

**Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa, Samastipur - 848125 (Bihar)**

## Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa

Agriculture and nutrition share a common entry point : "Food". Food is a key outcome of agricultural activities and in turn, is a key input into good nutrition. Thanks to Green Revolution, India has transformed into a major exporter of several agricultural commodities from a country dependent on food imports in the early 1960s. In the process of green revolution different technologies used to grow more food to feed increasing populations leave marks on the environment. India has achieved self-sufficiency in food production but it is cereal centric regionally biased and resource incentive production system. While these policies played an important role in ensuring calorie sufficiency across the country and thereby, led to a substantial reduction in the incidence of hunger. In spite of these successes more and more people remain hungry, lack sufficient nutrients; paradoxically, there are more people who are overweight and obese. This triple burden of malnutrition has been noted as new normal.

The status of food security in India through its four dimensions viz. availability, accessibility, utilization, and stability. Utilization of food, which is a key aspect of food security has been assessed through nutrition indicators such as stunting, wasting, underweight, anaemia and obesity based on NFHS-5 data.

Indiscriminate use of high analysis chemical fertilizers without any corresponding attempts at soil testing and soil replenishment agricultural soils are getting depleted with respect to micronutrients such as Zn, Cu, Fe, Mn, Bo etc. On the other hand, deforestation and floods made the soils more and more alkaline and saline. So, the crops produced in these soils contain inadequate minerals resulting in scare supply of these micronutrients.

The Comprehensive National Nutrition Survey (2016-18) have highlighted the role of micronutrient malnutrition. This hints towards the need for a transformative change in Indian Agriculture for better production, nutrition, environment and life. Several steps such as crop diversification to improve affordability and access to nutritious food; emphasis on cultivation of low input and resilient crops such as millets, diversifying the PDS food basket; bio-fortification; emphasis on women's education which has a positive multiplier effect on nutritional status of children have been taken in recent times. These need to be further strengthened going forward.

Nutrition security demands the intake of a wide range of foods which provides the essential needed nutrients. Food per se thus only one factor contributing to nutrition security. We should think about ultimate goal of nutrition security rather than the food security.

For Indians to eat better, a multi-prolonged strategy is required. A structural shift in dietary pattern and nutrition requires a shift in production. Pathways for nutritional security consist of improving dietary diversity, kitchen gardens, reducing post-harvest losses, making safety net programmes more nutrition-sensitive, women's empowerment, enforcement of standards and regulations, improving Water, Sanitation and Hygiene, nutrition education, and effective use of digital technology. Addressing the complex problem of malnutrition is an enormous task for which we need to look at agri-food systems as a whole and adopt a multi-pronged approach.

To address the triple burden of malnutrition like hidden hunger, lack of balance nutrients and overweight or obese and marching towards nutritional security the university has plan to organized kisan mela on this theme to make awareness among the stakeholder.

### Objective of Kisan Mela

Looking to relevance of agricultural education, research and extension of agricultural technologies among the farmers Agriculture Universities in the country were established with the ultimate aim of dissemination of agricultural technologies to the rural folk. Towards fulfilmeat of this objective, Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa organizes an annual Kisan Mela in the premises of the university for a successful Scientist, Producers, Service Providers and Farmers interface. In the year, 2024 this is being organized from 24-26 February on the theme of **"Towards Nutritional Security from Food Security."**

### Main Attractions of Mela

- Dissemination of knowledge & exhibition of agricultural technologies,
- Dissemination of agri based and allied skills,
- Exhibition by Producers, Service Providers, Financial Agencies and Banks in Agricultural Sector,
- Fruit/Forest Nursery plants for sale,
- Horticultural & Animal / Bird Show.
- Exhibition of various food products, millets, flowers, fruits, value added product etc.
- Organization of Kisan Gosthis/Quiz/Cultural Programme.
- Discussion on contemporary farming/allied issues,
- Prizes for best exhibits of farmers stall,
- Exhibition of various states including Producers of agricultural implements/ machines, various agricultural services and other Govt. Bodies including that of Bihar.
- Discussion on use of Drone in agriculture, micro-irrigation system and natural farming alongwith demonstration of Drone,
- Sale of Seed, Machinery, University Publication and other components of agriculture.
- To showcase mushroom production & preservation to small holders farmers for food & nutritional security.

Looking to this, participation of almost 10-15 thousand farmers are expected in the Mela.

### Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa

Established in the birth place of Agriculture Research & Education and named after the first president of India, late Dr. Rajendra Prasad, has contributed a lot to Agricultural Education, Research & Extension. The university is always ready to extend its full support to the development of agriculture & allied sector targeting the development of farmers.

### Invitation

Individuals & organizations related to Agriculture and allied vocations, farmers, institutions, government & non-governmental organizations, producers & marketing federations are cordially invited to participate, attend and put up their exhibits in Kisan Mela-2024.

### Facilities available in the stall for exhibitors :

1. There shall be 2 tables, 2 chairs with supply of electricity points in the stall.
2. The university shall have full right to change, make concession and give relief in the rates quoted for stalls.

### Stall :

The following type of stalls will be provided by university during Mela:

Three side covered stall : 4 Meter x 4 Meter = 16 sqm, Rate Rs. 8,000.00 (Eight Thousand) only.

## PROGRAMME

**24 February, 2024 (Saturday) - Registration, Inauguration and Exhibition**

**25 February, 2024 (Sunday) - Exhibition, Gosthi, Seminar and Field visits**

**26 February, 2024 (Monday) - Exhibition, Gosthi, Evaluation and Valedictory programme**

## How to reach to Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa

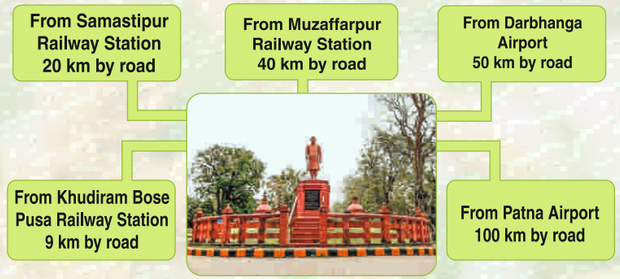


## ADVERTISEMENT SIZE AND RATES FOR SOUVENIR.

| Sl.No. | Size | Rate (Rs. |
|---|---|---|
| 1 | Backside Full Colored Page | 1,00,000-00 |
| 2 | Inside Cover Colored Page | 75,000-00 |
| 3 | Half colored page | 50,000-00 |
| 4 | Quarter size color page | 25,000-00 |

Advertisements can be sent in both English and Hindi as well as soft copy in ready-to-print format. The payment should be made in the name of "Kisan Mela-RPCAU, Pusa", Punjab National Bank, Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa A/C No. 4512000100027244 (IFSC Code: PUNB0451200) through Cash/DD/UPI. After paying the amount, please inform on e-mail: ddel.rpcau@gmail.com.

## CONTACT DETAILS

**Dr. M. S Kundu**
Director, Extension Education,
RPCAU, Pusa (Samastipur) 848 125
Mob. : 6287797109, 9474290668
E-mail- dee@rpcau.ac.in

**Dr. Jitendra Prasad**
Deputy Director Extension- I
Organizing Secretary, Kisan Mela-2024
RPCAU, Pusa (Samastipur) 848 125
Mobile No.- 9835763503, 6287797198
Email- dde1.rpcau@gmail.com

**Dr. Anupma Kumari**
Deputy Director Extension- II
Joint Organizing Secretary,
Kisan Mela-2024
RPCAU, Pusa (Samastipur) 848 125
Mobile No.- 8434383989, 6287797237
Email- anupmakumari@rpcau.ac.in

**Dr. R. K. Tiwari**
Sr. Scientist & Head (K.V.K., Birauli)
Joint Organizing Secretary,
Kisan Mela-2024
RPCAU, Pusa (Samastipur) 848 125
Mobile No.- 6287797157, 7295046855
E-mail- ravindra@rpcau.ac.in

**Dr. M. L. Meena**
Sr. Scientist & Head (K.V.K., Turki)
Joint Organizing Secretary,
Kisan Mela-2024
RPCAU, Pusa (Samastipur) 848 125
Mobile No.- 9414856397
E-mail- head.kvk.turki@rpcau.ac.in